अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) निम्न में से कौनसा परीषह नहीं हैं-
(क) वध परीषह (ख) अचर्या परीषह
(ग) शीत परीषह (घ) अलाभ परीषह (ख)

(ii) असालिया की आयु कितनी होती हैं-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) एक मुहूर्त्त
(ग) दो घड़ी (घ) एक अहोरात्रि (क)

(iii) श्रमण निग्रन्थों के सुख की तुल्यता का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-
(क) रायप्पसेणी सूत्र (ख) उपासक दशांग सूत्र
(ग) भगवती सूत्र (घ) पन्नवणा सूत्र (ग)

(iv) कौनसे देव जघन्य 7 स्तोक में उत्कृष्ट एक पक्ष से अधिक समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं-
(क) असुरकुमार (ख) नागकुमार
(ग) स्वर्णकुमार (घ) विद्युत् कुमार (क)

(v) कषाय के निमित्त से कौनसा बन्ध होता है-
(क) प्रकृति बन्ध (ख) प्रदेश बन्ध
(ग) स्थिति बन्ध (घ) तीनों ही सही (ग)

(vi) निम्न में से कौनसा ज्ञान विनय का भेद नहीं है-
(क) मतिज्ञान विनय (ख) श्रुतज्ञान विनय
(ग) अवधिज्ञान विनय (घ) केवलदर्शन विनय (घ)

(vii) संसार में ऐसी कोई जगह नहीं बची, जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो, इसकी पुष्टि के कितने कारण बताये हैं-
(क) 5 (ख) 7
(ग) 3 (घ) 4 (क)

(viii) भिक्षा चर्या तप का दूसरा नाम क्या है-
(क) आलोचना (ख) प्रतिक्रमण
(ग) वृत्ति संक्षेप (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(ix) चौबीस कवल आहार करना कौनसी ऊनोदरी कहलाती है-
(क) पौन ऊनोदरी (ख) आधी ऊनोदरी
(ग) किंचित् ऊनोदरी (घ) पाव ऊनोदरी (घ)

(x) अव्यवहार राशि में कौनसे जीव हैं-
(क) अभवी जीव (ख) भवी जीव
(ग) दोनों ही (घ) दोनों ही नहीं (ख)

(xi) पाप कर्म भोगने की कितनी प्रकृतियाँ हैं-
(क) 42 (ख) 28
(ग) 18 (घ) 82 (घ)

(xii) निम्न में से कौनसा संस्थान नहीं है-
(क) परिमंडल (ख) आभामंडल
(ग) वृत (घ) आयत (ख)

(xiii) गर्भज मनुष्य के अशुचि के कितने स्थान होते हैं-
(क) 24 (ख) 101
(ग) 9 (घ) 14 (घ)

(xiv) कायक्लेश तप के भेद में शरीर को खुजाले नहीं, यह अर्थ किस शब्द का है-
(क) अणिटठूहए (ख) अकंडूअए
(ग) अवाउडए (घ) आयावए (ख)

(xv) बुद्धबोधित सिद्ध होते हैं, उसका उदाहरण क्या दिया गया है-
(क) गौतम स्वामी (ख) जम्बु स्वामी
(ग) मरूदेवी माता (घ) महावीर स्वामी (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) स्त्री के 32 व नपुंसक के 28 कवल प्रमाण आहार नहीं बताया है। (हाँ)
(ii) शास्त्र आदि से लगने वाली क्रिया को अहिगरणिया कहते हैं। (नहीं)
(iii) तीन वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख असुरकुमार से बढ़कर होता हैं। (नहीं)
(iv) चोरी करने तथा चोरी के उपायों का चिन्तन करना स्तेनानुबन्धी कहलाता है। (हाँ)
(v) अन्तर्द्वीप के युगलिक मनुष्यों की आवश्यकता पूर्ति दस जाति के कल्पवृक्षों से होती है। (हाँ)
(vi) भिक्खलाभिए का अर्थ सरस आहार ग्रहण नहीं करना कहलाता है। (हाँ)
(vii) श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया हर गति,जाति आदि के जीवों में अलग-अलग प्रकार से होती है। (हाँ)
(viii) भगवान ऋभदेव के 98 पुत्रों ने धर्म भावना भाई थी। (नहीं)
(ix) यावत्कथिक अनशन के 14 भेद होते हैं। (नहीं)
(x) निगोद से प्रत्येक समय असंख्यात जीव काय परित्त में आते हैं। (हाँ)
(xi) उपकरण का त्याग करना उपाधि व्युत्सर्ग है। (नहीं)
(xii) आचार्य-उपाध्याय आदि की आहार-पानी की सेवा करना लोकोपचार विनय है। (नहीं)
(xiii) जीवों का भवसिद्धिपना स्वभाव से है, परिणाम से नहीं है। (हाँ)
(xiv) सम्यक्त्व प्राप्त करने वाला जीव संसार को असीमित कर देता है। (नहीं)
(xv) एक ही दोष की अनेक गीतार्थ मुनियों के पास आलोचना करे, उसे बहुजण कहते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(i)	बायरं	(क) रूपी	बादर
(ii)	भाव ऊनोदरी	(ख) अपायदर्शी	अल्प शब्द
(iii)	आणत	(ग) बादर	प्राणत
(iv)	भाजन	(घ) दीक्षा पर्याय में कमी	प्रतिपक्ष
(v)	अंजणा	(च) ग्रैवेयक	नारकी
(vi)	सात स्तोक	(छ) शाश्वत	एक लव
(vii)	आश्रव	(ज) दीनपना लाना	रूपी
(viii)	यशोधर	(झ) नारकी	ग्रैवयक
(ix)	लोक	(य) अल्प शब्द	शास्वत
(x)	क्षायिक	(र) मृदुता रहित	पारिणामिक
(xi)	निर्यापक	(ल) एक लव	अपायदर्शी
(xii)	णो इणट्ठे समट्ठे	(व) पारिणामिक	यह नहीं हो सकता
(xiii)	आर्त्तध्यान	(क्ष) प्राणत	दीनपना लाना
(xiv)	निष्ठुर	(त्र) यह नहीं हो सकता	मृदुता रहित
(xv)	छेद	(ज्ञ) प्रतिपक्ष	दीक्षा पर्याय में कमी

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मेरे अन्तर्गत आलोचना व प्रतिक्रमण दोनों का समावेश हो जाता है।	तदुभय
(ii)	मुझे समय विशेष का अभिग्रह करना कहते हैं।	कालाभिग्गह चरए
(iii)	बारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख मेरे सुख से बढ़कर है।	पाँच अनुत्तर विमान
(iv)	मेरे पचास भेद हैं।	प्रायश्चित
(v)	मैं चीर फाड़ आदि करने से लगने वाली क्रिया हूँ।	वेयारणिया
(vi)	हम जघन्य पृथक्त्व मुहूर्त्त झाझेरा, उत्कृष्ट दो पक्ष झाझेरा में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।	दूसरे देवलोक के देव
(vii)	मैंने नपुंसक पर्याय में रहकर मोक्ष को प्राप्त किया।	गांगेय अणगार
(viii)	मेरा अर्थ सुनार की एरण के समान गोल पैर वाले जैसे हाथी, गेंडा आदि होता है।	गंडीपया
(ix)	मेरे अड़तालीस भेद होते हैं।	तिर्यंच
(x)	मैं असंख्याता कोड़ाकोड़ी योजन का लम्बा-चौड़ा विस्तार वाला हूँ।	लोक
(xi)	मुझसे एक समय में उत्कृष्ट 108 मोक्ष में जा सकते हैं।	पुरुष लिंग
(xii)	मेरी 9 प्रकृतियाँ हैं।	दर्शनावरणीय कर्म की
(xiii)	मुझे अनुभाव बन्ध, अनुभव बन्ध तथा रस बन्ध भी कहते हैं।	अनुभाग बंध
(xiv)	मेरा त्याग करने से जीव संसार से तिर जाता है।	अठारह पाप
(xv)	मुझ से ऊपर देवियों के रूप में जन्म ही नहीं होता है।	दूसरे देवलोक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) नव लोकान्तिक देवों के नाम लिखिए।

उ. सारस्वत, आदित्य, वह्नि, वरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध, आग्नेय और अरिष्ट

(ii) प्रायश्चित्त के दस दोष में से तस्सेवी का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. जिस दोष की आलोचना करनी है, उसी दोष का सेवन करने वाले साधु के पास आलोचना करे।

(iii) सात मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख किसके सुख से बढ़कर होता है ?

उ. सात मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख सनत्कुमार और माहेन्द्र (3,4) देवलोक के देवों के सुख से बढ़कर होता है।

(iv) श्वासोच्छ्वास के थोकड़े सम्बन्धी दूसरा ज्ञातव्य तथ्य लिखिए।

उ. देवों में जितने सागरोपम की स्थिति होती है, उसके उतने पक्ष जितना श्वासोच्छ्वास क्रिया का विरह काल होता है।

(v) भिक्षाचर्या के तीस भेद में से प्रथम चार भेद के केवल नाम लिखिए।

उ. 1. दव्वाभिग्गह चरए 2. खेत्ताभिग्गह चरए 3. कालाभिग्गह चरह 4. भावाभिग्गह चरए

(vi) अन्तराय कर्म की प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय।

(vii) किस कारण से जीव संसार को बढ़ाता है और किस आचरण से संसार को घटाता है ?

उ. अठारह पापों के आचरण से जीव संसार बढ़ाता है ओर अठारह पापों से निवृत्त होकर जीव संसार को घटाता है।

(viii) यावत्कत्थिक अनशन के भेद के केवल नाम लिखिए।

उ. 1. पादपोपगमन 2. इंगितमरण 3. भक्त-प्रत्याख्यान

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) पच्चीस क्रियाओं में से अन्तिम तीन क्रियाओं का नाम लिखकर समझाइए।

उ. (23) पओगकिरिया-प्रमादपूर्वक गमनागमन करने से लगने वाली क्रिया।
(24) समुदाणकिरिया-समुदाय के रूप में लगने वाली क्रिया।
(25) इरियावहियाकिरिया-सयोगी वीतरागियों को लगने वाली क्रिया।

(ii) सातवें, आठवें व नवें ग्रैवेयक के देव जघन्य व उत्कृष्ट कितने समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं ?

उ. सातवीं ग्रैवेयक के देव जघन्य 28 पक्ष, उत्कृष्ट 29 पक्ष में
आठवीं ग्रैवेयक के देव जघन्य 29 पक्ष, उत्कृष्ट 30 पक्ष में
नौवी ग्रैवेयक के देव जघन्य 30 पक्ष, उत्कृष्ट 31 पक्ष में

(iii) मोक्ष तत्त्व के प्रथम छः द्वारों को केवल नाम लिखिए।

उ. 1. सत्पद प्ररुपणा द्वार 2. द्रव्य प्रमाण द्वार 3. क्षेत्र द्वार
4. स्पर्शना द्वार 5. काल द्वार 6. अन्तर द्वार

(iv) शुक्ल ध्यान की चार अनुप्रेक्षाओं के केवल नाम लिखिए।

उ. 1. अपायानुप्रेक्षा 2. अशुभानुप्रेक्षा 3. अनन्तवर्तितानुप्रेक्षा 4. विपरिणामानुप्रेक्षा

(v) श्रमण निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता का प्रथम ज्ञातव्य बिन्दु लिखिए।

उ. भगवती सूत्र शतक 14 उद्देशक 9 में श्रमण निर्ग्रन्थों के सुख के लिए 'तेजो लेश्या' शब्द का प्रयोग किया गया है। क्योंकि तेजो लेश्या प्रशस्त लेश्या है, वह सुख का कारण है।

(vi) प्रतिसंलीनता तप की परिभाषा लिखकर इसके भेदों की संख्या लिखिए।

उ. प्रतिसंलीनता का अर्थ है- गोपन करना। इन्द्रिय, कषाय और योगों की अशुभ प्रवृत्तियों से आत्म-गुणों की रक्षा करना 'प्रतिसंलीनता तप' है। प्रतिसंलीनता तप के 13 भेद हैं।

(vii) दस यति धर्म में से प्रथम 6 यति धर्म के नाम लिखिए।

उ. 1. खंती (क्षमा) 2. मुत्ति (संतोष) 3. अज्जवे (आर्जव-ऋजुता)
4. मद्दवे (मार्दव-मृदुता) 5. लाघवे (लघुता) 6. संजमे (संयम)

(viii) वर्ण के 100 भेदों को स्पष्ट कीजिए।

उ. काला का किया भाजन, चार का किया प्रतिपक्ष-बोल पावे बीस-दो गंध, पाँच रस, आठ स्पर्श और पाँच संस्थान। इसी प्रकार नीला, लाल, पीला, सफेद प्रत्येक में 20-20 बोल पाये जाते हैं। इस प्रकार वर्ण के 100 भेद हुए।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) जीव के सात भेदों में निम्न भेद आता है-
(क) स्त्रीवेद (ख) देवी
(ग) त्रसकाय (घ) पंचेन्द्रिय (ख)

(b) नपुंसक का आहार कवल प्रमाण बताया है-
(क) 36 (ख) 32
(ग) 28 (घ) 24 (घ)

(c) आश्रव भावना भाई-
(क) समुद्रपाल मुनि (ख) शिवराजर्षि
(ग) मृगापुत्र (घ) अनाथी मुनि (क)

(d) 'दूसरों को सुनाने के लिये जोर-जोर से बोलकर आलोचना करना'' दोष है-
(क) छण्णं (ख) अव्वत्त
(ग) तस्सेवी (घ) सद्दाउलगं (घ)

(e) व्यवहार राशि में जीव होते हैं-
(क) भवी (ख) अभवी
(ग) नो भवी नो अभवी (घ) भवी-अभवी दोनों (घ)

(f) भव भ्रमण का थोकड़ा लिया है -
(क) शतक 12 उद्देशक 7 (ख) शतक 7 उद्देशक 12
(ग) शतक 2 उद्देशक 8 (घ) शतक 8 उद्देशक 7 (क)

(g) सातवें देवलोक का देव उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास होता है-
(क) 21 पक्ष (ख) 18 पक्ष
(ग) 17 पक्ष (घ) 14 पक्ष (ग)

(h) ज्योतिषी देव जघन्य श्वासोच्छ्वास लेते हैं-
(क) 7 स्तोक (ख) पृथक्त्व मुहूर्त्त
(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) 1 पक्ष (ख)

(i) पाँच मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख बढ़कर है-
(क) ग्रह से (ख) सौधर्म देव से
(ग) असुरकुमार से (घ) सूर्य से (घ)

(j) निगोद से प्रत्येक समय कितने जीव काय परीत्त (प्रयेक काय) में आते हैं-
(क) असंख्यात (ख) अनन्त
(ग) अनन्तानंत (घ) संख्यात (क)

(k) श्रमण निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता का थोकड़ा, किस दर्जे की संयम पर्याय का पालन करने वाले श्रमण निर्ग्रन्थों की अपेक्षा लिया गया है-
(क) जघन्य (ख) मध्यम
(ग) उत्कृष्ट (घ) सभी (ख)

(l) ''नरकायु के कारण रूप मिथ्यात्व आदि का त्याग करना'' कहलाता है-
(क) कर्म व्युत्सर्ग (ख) संसार व्युत्सर्ग
(ग) शरीर व्युत्सर्ग (घ) योग व्युत्सर्ग (ख)

(m) 'श्रोत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव' कौनसे कर्म को बार-बार बाँधता है-
(क) निकाचित (ख) महा मोहनीय
(ग) साता वेदनीय (घ) असाता वेदनीय (घ)

(n) शिष्यादि की जाँच के लिये दोष लगाना कहलाता है-
(क) विमर्श (ख) प्रद्वैष
(ग) निर्यापक (घ) अपरिश्रावी (क)

(o) कौन अपनी आत्मा को आचार्यादि की वैयावृत्य में जोड़ेगा -
(क) निर्बल (ख) सुप्त
(ग) उद्यमी (घ) बलवान् (ग/घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) बघार नहीं दिये हुए आहार को लेना अरसाहारे कहलाता है। (हाँ)
(b) देवादिक का उपसर्ग होने पर भी भयभीत होकर विचलित न होना 'असंमोह है। (नहीं)
(c) सिद्ध भगवान की जितनी स्पर्शना है, उससे अवगाहना कुछ अधिक है। (नहीं)
(d) जीवों का भव सिद्धिपना स्वभाव से हैं। (हाँ)
(e) जो जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आ जाते हैं, वे अवश्य ही मोक्ष जाते हैं। (हाँ)
(f) जयंती श्रमणोपासिका ने दीक्षा लेकर मोक्ष गति को प्राप्त किया। (हाँ)
(g) जीव बारहवें देवलोक में देवीपने में अनन्त बार उत्पन्न हो चुका है। (नहीं)
(h) अव्यवहार राशि में सूक्ष्म वनस्पतिकाय के ही जीव आते हैं। (नहीं)
(i) जो जीव जितने सुखी होते हैं, उनकी श्वासोच्छ्वास क्रिया उत्तरोत्तर देरी से चलती है। (हाँ)
(j) पंचेन्द्रिय जीव नाक और मुख से ही श्वास लेते तथा छोड़ते हैं। (नहीं)
(k) लम्बा लेटकर पड़े रहना लडडसाई आसन है। (नहीं)
(l) 9 मास की दीक्षा पर्याय वाला श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख सातवें-आठवें देवलोक के देवों के सुख से भी बढ़कर है। (हाँ)
(m) सभी जीव इस जीव के शत्रुपने अनंत बार उत्पन्न हुए हैं। (हाँ)
(n) भगवती सूत्र के 14वें शतक के 8वें उद्देशक में श्रमण-निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता का थोकड़ा चलता है। (नहीं)
(o) सभी भवसिद्धिक जीव मोक्ष जायेंगे तो यह लोक भव सिद्धिक जीवों से खाली हो जायेगा। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	कुत्ता	(क) पाप-प्रकृति	सण्णपया
(b)	सुहाला	(ख) प्रतिसेवना	रूपी अजीव
(c)	गाय	(ग) परीषह	दो खुर
(d)	रति	(घ) असुरेन्द्र के सिवाय 9 निकाय के देव	पाप प्रकृति
(e)	अगुरुलघु	(च) शुक्लध्यान	पुण्य प्रकृति
(f)	अज्ञान	(छ) 11वाँ देवलोक	परीषह
(g)	अल्प कलह	(ज) 12वाँ देवलोक	भाव ऊनोदरी
(h)	व्युत्सर्ग	(झ) सण्णपया	प्रायश्चित्त
(i)	शंकित	(य) चौथी ग्रैवेयक	प्रतिसेवना
(j)	अव्यथ	(र) असुरकुमार	शुक्ल ध्यान
(k)	तीन मास की दीक्षा पर्याय	(ल) रूपी अरूपी	असुरकुमार
(l)	दो मास की दीक्षा पर्याय	(व) भाव ऊनोदरी	असुरेन्द्र के सिवाय 9 निकाय के देव
(m)	21 पक्ष	(क्ष) प्रायश्चित्त	11वाँ देवलोक
(n)	25 पक्ष	(त्र) दो खुर	चौथी ग्रैवेयक
(o)	22 पक्ष	(ज्ञ) पुण्य प्रकृति	12वाँ देवलोक

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a)	मुझसे निवृत्त होकर जीव संसार को घटाता है।	अठारह पाप
(b)	मुझमें भवी जीव ही है।	अव्यवहार राशि
(c)	मैं धर्म से आजीविका करता हूँ।	धर्मी जीव
(d)	मेरी श्रेणी अनादि-अनंत हैं।	आकाश
(e)	हम स्पर्शनेन्द्रिय से ही श्वास लेते और छोड़ते हैं।	एकेन्द्रिय
(f)	मैं सात स्तोक से मिलकर बनता हूँ।	लव
(g)	हमारा श्वास लोहार की धमण की तरह निरन्तर होता है।	नारकी के नेरिये
(h)	मेरी ढाई पुद्गल परावर्तन काल की कायस्थिति मात्र व्यवहार राशि के जीवों की अपेक्षा से लागू होती है।	निगोद
(i)	मैं नित्य हूँ।	जीव
(j)	मैं असंख्याता कोड़ाकोड़ी योजन लम्बा चौड़ा विस्तार वाला हूँ।	लोक
(k)	मैं सुख का कारण हूँ।	तेजो लेश्या
(l)	मेरे जितने काल तक जीवों का लोक में जन्म-मरण माना गया है।	अनन्त पुद्गल परावर्तन
(m)	जो हमें जानता हैं, उसे सम्यक्त्व प्राप्त होता है।	जीवादि नवतत्त्व
(n)	दीनपना लाना मेरा लक्षण है।	आर्त्तध्यान
(o)	मैं हिंसादि के कार्य करने से लगने वाली क्रिया हूँ।	अणवकंखवत्तिया

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(a) अणिट्ठूहए का क्या अर्थ है ?
थूँक को बाहर थूँके नहीं

(b) वितत पक्षी किसे कहते हैं ?
जिनके पंख हमैशा खुले-फैले हुए रहते हैं।

(c) घ्राणेन्द्रिय के वश में हुआ जीव सात कर्मों की प्रकृति किस तरह बाँधता है ?
यदि ढीली (शिथिल) बन्धी हो तो गाढ़ी (दृढ़) करता है।

(d) अधर्म में आनन्द मानने वाले जीव निर्बल अच्छे होते हैं अथवा बलवान अच्छे होते हैं ?
निर्बल अच्छे होते हैं।

(e) कौनसे काल का कभी अन्त नहीं होगा ?
भविष्यत् काल का कभी अन्त नहीं होगा।

(f) जीव चार अनुत्तर विमान में अधिक से अधिक कितनी बार जन्म लेता है ?
2 बार।

(g) चौथे देवलोक के देव जघन्य व उत्कृष्ट कितने समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं ?
जघन्य-2 पक्ष झाझेरा। उत्कृष्ट- 7 पक्ष झाझेरा।

(h) दस मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख कौनसे देवलोक के सुखों से बढ़कर है ?
9,10,11,12 वें देवलोक के सुखों से।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(a) कौन-कौनसे जीव अनियत समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं ?
पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य, विमात्रा अर्थात् अनियत समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

(b) किस कारण से जीव संसार सागर में परिभ्रमण करता है और किस विधि से जीव संसार सागर को तिर कर पार हो जाता है ?
अठारह पापों के सेवन से जीव संसार-सागर में रुलता रहता है और अठारह पापों का त्याग करके जीव, संसार से तिर जाता है।

(c) **चार प्रकार के बंध किसके निमित्त से होते हैं ?**
प्रकृति बंध और प्रदेश बंध योग के निमित्त से होते है, जबकि स्थिति बंध और अनुभाग बंध कषाय के निमित्त से होते हैं।

(d) **शुक्ल ध्यान का तीसरा भेद कौनसे गुणस्थान में व कब होता है ?**
शुक्ल ध्यान का तीसरा भेद तेरहवें गुणस्थान में होता है।
मोक्ष जाने से पूर्व केवली भगवान के मनयोग, वचनयोग और काया के स्थूल योग का निरोध करने के पश्चात् सूक्ष्म क्रिया का निरोध करते समय की अवस्था।

(e) **केवल ज्ञानी की अपेक्षा ध्यान की परिभाषा लिखिए।**
योगों का निरोध करना ध्यान कहलाता है।

(f) **अफरूष और अनाश्रवकारी का अर्थ लिखिए।**
अफरुष- स्नेह-प्रेम सहित।
अनाश्रवकारी- अशुभ कर्मों के आश्रव को रोकने वाला।

(g) **मन प्रतिसंलीनता को समझाइए।**
मन की अशुभ प्रवृत्ति पर नियन्त्रण करना और शुभ प्रवृत्तियों को मन में प्रवर्ताना।

(h) **निहारी और अनिहारी संथारे के भेद को समझाइए।**
निहारी- गाँव में होवे-अग्नि संस्कार सहित।
अनिहारी- गाँव के बाहर होवे- अग्नि संस्कार रहित।

कक्षा : तृतीय – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) जलचर का भेद नहीं हैं-
(क) सुंसुमार (ख) ग्राह
(ग) बिखुरा (घ) कच्छप (ग)

(b) जिस क्रिया द्वारा आत्मा में शुभ-अशुभ कर्म आते हैं, उसे कहते हैं-
(क) आश्रव (ख) बंध
(ग) पाप (घ) निर्जरा (क)

(c) सम्मूर्च्छिम मनुष्य के भेद हैं-
(क) 201 (ख) 101
(ग) 202 (घ) 102 (ख)

(d) पाप तत्त्व कितने प्रकार से भोगा जाता हैं-
(क) 42 (ख) 82
(ग) 18 (घ) 22 (ख)

(e) बेइन्द्रिय का उदाहरण नहीं हैं -
(क) लट (ख) कृमि
(ग) खटमल (घ) शंख (ग)

(f) निम्न में से अरूपी तत्त्व है -
(क) पुण्य (ख) पाप
(ग) बंध (घ) जीव (घ)

(g) देवादिक का उपसर्ग होने पर भी भयभीत होकर विचलित नहीं होना कहलाता है -
(क) अव्यथ (ख) असंमोह
(ग) व्युत्सर्ग (घ) अविवेक (क)

(h) कौनसे जीव जागते हुए अच्छे होते हैं-
(क) धर्मी (ख) अधर्मी
(ग) दोनों ही (घ) दोनों ही नहीं (क)

(i) जयन्ती बाई के प्रश्नोत्तर भगवती सूत्र के किस शतक व उद्देशक में वर्णित हैं-
(क) शतक 12 उद्देशक 7 में (ख) शतक 12 उद्देशक 2 में
(ग) शतक 7 उद्देशक 12 में (घ) शतक 14 उद्देशक 9 में (ख)

(j) निगोद की उत्कृष्ट काय स्थिति है-
(क) डेढ़ पुद्गल परावर्तन की (ख) साढे तीन पुद्गल परावर्तन की
(ग) ढाई पुद्गल परावर्तन की (घ) दो पुद्गल परावर्तन की (ग)

(k) लोक है-
(क) अशाश्वत (ख) शाश्वत
(ग) दोनों ही (घ) कोई नहीं (ख)

(l) अहोरात्रि में कितने मुहूर्त्त होते हैं-
(क) 30 (ख) 15
(ग) 20 (घ) 10 (क)

(m) श्वासोच्छ्वास का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है -
(क) प्रज्ञापना सूत्र (ख) भगवती सूत्र
(ग) उत्तराध्ययन सूत्र (घ) नन्दी सूत्र (क)

(n) पाँच मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख कौनसे देव के सुख से बढ़कर होता हैं-
(क) सूर्य (ख) नक्षत्र
(ग) ग्रह (घ) तारा (क)

(o) एक दिन के संयम पर्याय के पालन में ही किसने शाश्वत सिद्धी रूपी सुख को प्राप्त किया-
(क) गजसुकुमाल मुनि (ख) भरत महाराजा
(ग) भगवान महावीर (घ) उक्त सभी (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) वनस्पतिकाय का वर्ण हरा होता है। (नहीं)

(b) युगलिक मरकर देवलोक में उत्पन्न होते हैं। (हाँ)

(c) किसी पर झूठा दोष लगाना पर परिवाद होता है। (नहीं)

(d) 'नेसज्जिए' कायक्लेश तप का भेद होता है। (हाँ)

(e) पारिणामिक भाव में जीवत्व पाया जाता है। (हाँ)

(f) वितत पक्षी ढ़ाई द्वीप में होते हैं। (नहीं)

(g) जीवों का भवसिद्धिपना परिणाम से हैं। (नहीं)

(h) जयन्ती श्रमणोपासिका ने देवानंदा की तरह दीक्षा लेकर मोक्षगति को प्राप्त किया। (हाँ)

(i) व्यवहार राशि के सभी भवसिद्धिक जीव मोक्ष प्राप्त करेगें। (हाँ)

(j) व्यवहार राशि में भव्य तथा अभव्य दोनों प्रकार के जीव रहते हैं। (हाँ)

(k) अठारह पापों का आचरण करके जीव कर्मों की स्थिति घटाता है। (नहीं)

(l) नरकादि सब स्थानों में सब जीव त्रस स्थावरपने अनन्त बार उत्पन्न हुआ हैं। (हाँ)

(m) श्वासोच्छ्वास मात्र घ्राणेन्द्रिय (नासिका) से ही लिया जाता है। (नहीं)

(n) नारकी के नेरिये लोहार की धमण की तरह निरंतर श्वासोच्छ्वास लेते रहते हैं। (हाँ)

(o) दो मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख असुरेन्द्र के सुख से बढ़कर होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	चाँदी	(क) प्रत्येक वनस्पति	बादर पृथ्वीकाय
(b)	वृक्ष	(ख) तेऊकाय	प्रत्येक वनस्पति
(c)	सुधर्मा स्वामी	(ग) पृथक्त्व मुहूर्त्त	स्वलिंग सिद्ध
(d)	उल्कापात	(घ) चौरेन्द्रिय	तेऊकाय
(e)	आलोचना	(च) स्वलिंग सिद्ध	प्रायश्चित्त
(f)	हल्दी	(छ) बादर पृथ्वीकाय	साधारण वनस्पति
(g)	मच्छर	(ज) अनादि अनन्त	चौरेन्द्रिय
(h)	अवसर्पिणी	(झ) व्यवहार राशि	उत्सर्पिणी
(i)	भवसिद्धिक जीव	(य) मरु देवी	मोक्ष
(j)	आकाश श्रेणी	(र) अव्यवहार राशि	अनादि अनंत
(k)	अधर्मी जीव	(ल) प्रायश्चित्त	सोते हुए
(l)	भवी जीव	(व) मोक्ष	अव्यवहार राशि
(m)	प्रत्येक काय	(क्ष) उत्सर्पिणी	व्यवहार राशि
(n)	ज्योतिषी देवों का श्वासोच्छ्वास	(त्र) सोते हुए	पृथक्त्व मुहूर्त्त
(o)	अन्तर्मुहूर्त्त में कैवल्य पर्याय	(ज्ञ) साधारण वनस्पति	मरुदेवी

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मैं स्वाध्याय का वह भेद हूँ, जिसमें सीखे हुए सूत्रादि ज्ञान का मनन चिंतन किया जाता है। — अनुप्रेक्षा

(b) मैंने संवर भावना भाई थी। — हरिकेश मुनि

(c) मैं बारह योजन की मिट्टी खा जाता हूँ। — असालिया

(d) मेरा गोत्र पंकप्रभा है। — अंजणा नारकी

(e) मुझे बांधना कठिन और भोगना सहज है। — पुण्य

(f) मेरे उत्कृष्ट 560 भेद होते हैं। — अजीव

(g) मैं प्राणों का विनाश करने से लगने वाली क्रिया हूँ। — पाणाइवाइया

(h) मैं निर्जरा का वह भेद हूँ, जिसे वृत्ति-संक्षेप भी कहा जाता है। — भिक्षाचर्या

(i) मेरे वश में हुआ जीव चार गति रूप संसार में परिभ्रमण करता रहता है। — श्रोत्रेन्द्रिय

(j) मेरा त्याग करके जीव संसार से तिर जाता है। — अठारह पाप

(k) मैं अधर्म में आनन्द मानता हूँ। — अधर्मी जीव

(l) मैंने 'विशेषणवती' नामक ग्रन्थ लिखा। — आचार्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण

(m) मैं स्पर्शनेन्द्रिय से ही श्वास लेता व छोड़ता हूँ। — एकेन्द्रिय

(n) मेरा श्वासोच्छ्वास जघन्य 2 पक्ष उत्कृष्ट 7 पक्ष का होता है। — तीसरे देवलोक के देव

(o) मेरा सुख नवग्रैवेयक देवों के सुख से बढ़कर होता है। — ग्यारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) अपायविचय का अर्थ लिखिए।

उ. राग-द्वेषादि दोषों को तथा उनसे होने वाली हानियों का चिन्तन करना।

(b) पाँच अनुत्तर विमान के देवों के नाम लिखिए।

उ. विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित और सर्वार्थ सिद्ध।

(c) भाव ऊनोदरी के छह भेद लिखिए।

उ. 1. अल्प क्रोध, 2. अल्प मान, 3. अल्प माया, 4. अल्प लोभ, 5. अल्प शब्द, 6. अल्प कलह।

(d) आश्रव के जघन्य भेद कितने होते हैं ? नाम भी लिखिए।

उ. 5 भेद-1. मिथ्यात्व, 2. अव्रत, 3. प्रमाद, 4. कषाय और 5. अशुभ योग।

(e) धर्मी जीव किसके लिए सुखकारी हैं ?

उ. सभी प्राण, भूत, जीव और सत्व के लिए सुखकारी है।

(f) यह लोक कितना बड़ा हैं ?

उ. यह लोक असंख्याता कोड़ाकोड़ी योजन का लम्बा चौड़ा विस्तार वाला है।

(g) सातवीं ग्रैवेयक के देव का श्वासोच्छ्वास लिखिए।

उ. जघन्य 28 पक्ष तथा उत्कृष्ट 29 पक्ष में।

(h) सात मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख कौनसे देवलोक के देवों के सुख से बढ़कर होता है ?

उ. सनत्कुमार और माहेन्द्र देवलोक के देवों के सुख से।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) विनय किसे कहते हैं ? इसके भेद भी लिखिए।

उ. ज्ञान आदि सद्गुणों में एवं इन गुणों के धारक महापुरुषों के प्रति बहुमान रखना, उनको उचित सत्कार सम्मान देना 'विनय' कहलाता है।

विनय के सात भेद हैं- 1. ज्ञान विनय, 2. दर्शन विनय, 3. चारित्र विनय, 4. मन विनय, 5. वचन विनय, 6. काय विनय, 7. लोकोपचार विनय।

(b) देवता के 198 मूल भेद पाठ्य पुस्तक के अनुसार लिखिए।

उ. दस भवनपति, पन्द्रह परमाधामी, सोलह वाणव्यंतर, दस त्रिजृम्भक, दस ज्योतिषी, तीन किल्विषी, बारह देवलोक, नव लोकांतिक, नव ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर विमान-ये देवता के 99 भेद है, इनके 99 पर्याप्त और 99 अपर्याप्त कुल 198 भेद हुए।

(c) रौद्र ध्यान के प्रथम तीन लक्षण लिखिए।

उ. 1. हिंसा, झूठ, चोरी आदि दोषों का सेवन करना।
2. हिंसा, झूठ, चोरी आदि दोषों का बार-बार सेवन करना।
3. अधर्म के कार्यों में धर्म मानकर प्रवृत्ति करना।

(d) भवसिद्धिक जीवों के मोक्ष में जाने पर भी व्यवहार राशि में जीव हमैशा बराबर बने रहते हैं, उनकी संख्या कम नहीं होती है। इसका क्या कारण है ?

उ. जितने जीव मोक्ष में जाते हैं, उतने ही भव्य जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आ जाते हैं,इस कारण से व्यवहार राशि में भव्य जीव हमैशा बराबर ही रहते हैं।

(e) संसार में ऐसी कोई जगह नहीं बची, जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो। इस बात की पुष्टि के लिए कोई चार कारण लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई चार कारण-
1. लोक शाश्वत है। 2. लोक अनादि है।
3. जीव नित्य है। 4. कर्मों की बहुलता है। 5. जन्म-मरण की बहुलता है।

(f) देवताओं में श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाइए।

उ. देवताओं में श्वास ग्रहण की प्रक्रिया अन्तर्मुहूर्त्त तक चलती है फिर अन्तर्मुहूर्त्त तक श्वास छोड़ते हैं। उदाहरण के रूप में एक सैकण्ड तक श्वास लेते रहना फिर एक सैकण्ड तक श्वास छोड़ते रहना। अर्थात् अन्तर्मुहूर्त्त तक श्वास लेने-छोड़ने की प्रक्रिया चलती है।

(g) आठवें ,नवमें देवलोक व पाँचवीं, छठी ग्रैवेयक के देवों की जघन्य व उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास की स्थिति लिखिए।

उ. आठवें देवलोक के देव जघन्य 17 पक्ष, उत्कृष्ट 18 पक्ष में।
नवमें देवलोक के देव जघन्य 18 पक्ष, उत्कृष्ट 19 पक्ष में
पाँचवीं ग्रैवेयक के देव जघन्य 26 पक्ष, उत्कृष्ट 27 पक्ष में
छठी ग्रैवेयक के देव जघन्य 27 पक्ष, उत्कृष्ट 28 पक्ष में

(h) कौनसा साधु तेजो लेश्या रूप सुख की अनुभूति करने वाला होता है ?

उ. जो नम्र वृत्ति वाला, अचपल, माया से रहित, कुतुहल से रहित, विनीत, दान्त, स्वाध्यायादि से समाधि सम्पन्न और उपधानवान है, प्रियधर्मी, दृढधर्मी है, पाप भीरू है, प्राणिमात्र का हितैषी है ऐसा साधु तेजोलेश्या रूप सुख की अनुभूति करने वाला होता है।

कक्षा : तृतीय – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) जो आत्मा को मलिन करे, उसे कहते है-
(क) जीव तत्त्व (ख) पुण्य तत्त्व
(ग) पाप तत्त्व (घ) संवर तत्त्व (ग)

(b) निम्न में से अरूपी तत्त्व है-
(क) मोक्ष (ख) पुण्य
(ग) पाप (घ) आश्रव (क)

(c) 'हड़मची' किसका भेद है-
(क) अप्काय (ख) पृथ्वीकाय
(ग) तेउकाय (घ) वायुकाय (ख)

(d) पुण्य तत्त्व कितने प्रकार से भोगा जाता है-
(क) 18 (ख) 42
(ग) 82 (घ) 20 (ख)

(e) जयंतीबाई के प्रश्न वर्णित हैं-
(क) नन्दी सूत्र (ख) आवश्यक सूत्र
(ग) भगवती सूत्र (घ) सूखविपाक सूत्र (ग)

(f) किस कारण से जीव संसार सागर में परिभ्रमण करता है-
(क) पाप के सेवन से (ख) पुण्य के सेवन से
(ग) संवर के सेवन से (घ) लोभ के सेवन से (क)

(g) कौनसे जीव मोक्ष में जाते हैं-
(क) भवी जीव (ख) अभवी जीव
(ग) दोनों ही (घ) दोनों ही नहीं (क)

(h) भव-भ्रमण के थोकड़े का वर्णन भगवती सूत्र के कौनसे शतक में किया गया है-
(क) 7वें शतक में (ख) 11वें शतक
(ग) 12वें शतक (घ) 14वें शतक (ग)

(i) पहली ग्रैवेयक के देव जघन्य कितने पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं-
(क) 14 पक्ष (ख) 22 पक्ष
(ग) 28 पक्ष (घ) 23 पक्ष (ख)

(j) एक मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख किससे बढ़कर होता है-
(क) भवनपति देव से (ख) ज्योतिषी देव से
(ग) वाणव्यन्तर देव से (घ) वैमानिक देव से (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) योग और कषाय कर्मबंध का कारण है। (हाँ)
(b) 'जलरूहा' प्रत्येक वनस्पति का एक भेद है। (हाँ)
(c) शस्त्र आदि से लगने वाली क्रिया पुट्ठिया है। (नहीं)
(d) लोक भावना अर्जुन अणगार ने भाई थीं। (नहीं)
(e) अव्यवहार राशि में भवी जीव ही होते हैं। (हाँ)
(f) धर्मी जीव जागते हुए अच्छे होते हैं। (हाँ)
(g) अठारह पापों का त्याग करने से जीव कर्मों की स्थिति घटाता है। (हाँ)
(h) निगोद से प्रत्येक समय असंख्यात जीव काय परीत्त में आते हैं। (हाँ)
(i) श्वासोच्छ्वास के थोकड़े का उल्लेख प्रज्ञापना सूत्र में किया गया है। (हाँ)
(j) पाँच मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रथ का सुख ज्योतिषी देवों के सुख से बढ़ कर होता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	उपयोग लक्षण	(क) एकान्त मिथ्यादृष्टि	जीव
(b)	कुंथुआ	(ख) मृगापुत्र जी	तेइन्द्रिय
(c)	भवसिद्धिक जीव	(ग) 18 पापों का सेवन	मोक्ष
(d)	पंचेन्द्रिय जीवों का श्वासोच्छ्वास	(घ) ढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल	र्स्पशन,मुख एवं घ्राण
(e)	शाश्वत सिद्धि सुख	(च) जीव	गजसुकुमाल मुनि
(f)	अन्तरद्वीपा युगलिक मनुष्य	(छ) मोक्ष	एकान्त मिथ्यादृष्टि
(g)	संसार परिभ्रमण	(ज) अनादि अनन्त	18 पापों का सेवन
(h)	निगोद की स्थिति	(झ) र्स्पशन,मुख एवं घ्राण	ढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल
(i)	आकाश श्रेणी	(य) गजसुकुमाल मुनि	अनादि अनन्त
(j)	अन्यत्व भावना	(र) तेइन्द्रिय	मृगापुत्र जी

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं क्रिया का एक भेद हूँ, जो घी-तेल के पात्र खुले रखने से लगती है।	सामन्तोवणिवाइया
(b)	मैने अशुचि भावना भाई थीं।	सनत्कुमार चक्रवती
(c)	मैं विनय का एक ऐसा भेद हूँ, जिसमें गुरु महाराज के अनुकूल रहकर प्रवृत्ति की जाती है।	लोकोपचार विनय
(d)	मेरे सेवन से जीव भारी होता है।	पापों का सेवन
(e)	मेरे सोने से प्राण, भूत, जीव, सत्व दुःख नहीं पाते हैं।	अधर्मी जीव
(f)	मेरी राशि के जीव अवश्य मोक्ष में जाते हैं।	व्यवहार राशि
(g)	मेरा वर्णन भगवती सूत्र के 12वें शतक के 7वें उद्देशक में किया गया है।	भव-भ्रमण का थोकड़ा
(h)	मैं कर्म का वह भेद हूँ, जिसके उदय होने से जीव निगोद को छोड़कर प्रत्येक काय में आ जाता है।	प्रत्येक नाम कर्म
(i)	मैं भवनपति देवों का एक भेद हूँ, मेरी जघन्य श्वासोच्छ्वास स्थिति 7 स्तोक है।	असुर कुमार
(j)	मेरा श्वासोच्छ्वास जघन्य 24 पक्ष में उत्कृष्ट 25 पक्ष में होता है।	तीसरी ग्रैवेयक

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) जलचर के कितने भेद हैं ? नाम लिखिए।

उ. जलचर के पाँच भेद हैं- मच्छ, कच्छप, ग्राह, मगर और सुंसुमार।

(b) प्रतिसंलीनता का अर्थ क्या है तथा इसके कितने भेद हैं ?

उ. प्रतिसंलीनता का अर्थ 'गोपन करना' है तथा इसके 13 भेद हैं।

(c) स्वाध्याय के पाँच भेद अर्थ सहित लिखिए।

1. वायणा (वाचना)- गुरु से सूत्र अर्थ पढ़ना।

2. पडिपुच्छणा (प्रतिपृच्छना)-शंका-समाधान के लिये अथवा विशेष निर्णय के लिए प्रश्न करना।

3. परियट्टणा (परिवर्तना)- सीखे हुए ज्ञान को बार-बार फेरना।

4. अणुप्पेहा (अनुप्रेक्षा)- सीखे हुए सूत्रादि ज्ञान का मनन-चिन्तन करना।

5. धम्मकहा (धर्मकथा)- धर्मोपदेश देना।

(d) द्रव्य व्युत्सर्ग के चार भेद लिखिए।

उ. 1. शरीर व्युत्सर्ग, 2. गण व्युत्सर्ग, 3. उपधि व्युत्सर्ग, 4. भक्त पान व्युत्सर्ग।

(e) सिद्ध आत्मा के आठ गुण लिखिए।

उ. 1. अनन्त ज्ञान, 2. अनन्त दर्शन, 3. निराबाध सुख, 4. क्षायिक समकित, 5. अटल अवगाहना

6. अमूर्ति, 7. अगुरुलघु, 8. अनन्त आत्म-सामर्थ्य।

(f) आश्रव के जघन्य, मध्यम एवं उत्कृष्ट भेदों की संख्या लिखिए।

उ. आश्रव के जघन्य- पाँच भेद, मध्यम-20 भेद और उत्कृष्ट- 42 भेद हैं।

(g) धर्मी जीव जागते हुए क्यों अच्छे होते हैं ?

उ. जो जीव धर्मी हैं, यावत् धर्म से आजीविका करते हैं, वे जागते हुए अच्छे हैं। जागते हुए वे सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व के लिये सुखकारी होते हैं, यावत् अपनी तथा दूसरों की आत्मा को धर्म से जोड़ते हैं।

(h) अव्यवहार राशि में कौन-कौनसे जीव होते हैं ?

उ. सूक्ष्म व साधारण वनस्पति अर्थात् निगोद के ऐसे जीव जिन्होंने अभी तक अनन्तकायपने को एक बार भी नहीं छोड़ा है, उसी में अनादिकाल से जन्म-मरण करते आ रहे हैं वे अव्यवहार राशि के जीव कहलाते हैं।

(i) दूसरे देवलोक के देवों की जघन्य एवं उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास की स्थिति लिखिए।

उ. दूसरे देवलोक के देव जघन्य स्थिति- पृथक्त्व मुहूर्त्त झाझेरा तथा उत्कृष्ट स्थिति- दो पक्ष झाझेरा।

(j) दुःखी एवं सुखी जीवों में श्वासोच्छ्वास क्रिया का उल्लेख कीजिए।

उ. जो जीव जितने अधिक दुःखी होते हैं, उन जीवों की श्वासोच्छ्वास क्रिया उतनी ही अधिक और शीघ्र चलती है। अत्यन्त दुःखी जीवों के तो यह क्रिया निरन्तर चलती है।

जो जीव जितने अधिक सुखी होते हैं, उनकी श्वासोच्छ्वास क्रिया उत्तरोत्तर देरी से चलती है।

(k) तीन मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख किससे बढ़कर होता है ?

उ. तीन मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख असुरकुमारों से बढ़कर होता है।

(l) कौनसा साधु तेजो लेश्या रूपी सुख की अनुभूति करने वाला होता है ?

उ. जो नम्र वृत्ति वाला, अचपल, माया से रहित, कुतुहल से रहित, विनीत, दान्त, स्वाध्यायादि ये समाधि सम्पन्न और उपधानवान है, प्रियधर्मी, दृढ़धर्मी है, पाप भीरु है, प्राणिमात्र का हितैषी है ऐसा साधु तेजो लेश्या रूप सुख की अनुभूति करने वाला होता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3 = (36)

(a) नारकी के चौदह भेदों को विस्तार से लिखिए।

उ. सात नारकी के नाम- घम्मा, वंसा, सीला, अंजणा, रिट्ठा, मघा और माघवई। सात नारकी के गोत्र- रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा और तमतमाप्रभा (तमस्तमा प्रभा)।

इन सात नारकी के पर्याप्त अपर्याप्त के भेद से चौदह भेद होते हैं।

(b) बाईस परीषहों के नाम लिखिए।

उ. 1. क्षुधा परीषह, 2. पिपासा (तृषा) परीषह, 3. शीत परीषह, 4. उष्ण परीषह, 5. दंशमशक परीषह, 6. अचेल परीषह, 7. अरति परीषह, 8. स्त्री परीषह, 9. चर्या परीषह, 10. निषद्या परीषह, 11. शय्या परीषह, 12. आक्रोश परीषह, 13. वध परीषह, 14. याचना परीषह, 15. अलाभ परीषह, 16. रोग परीषह, 17. तृणस्पर्श परीषह, 18. जल्ल (मैल-पसीना आदि)परीषह, 19. सत्कार पुरस्कार परीषह, 20. प्रज्ञा परीषह, 21. अज्ञान परीषह, 22. दर्शन परीषह।

(c) प्रायश्चित्त लेने वाले के 10 गुण लिखिए।

उ. 1. जाति सम्पन्न, 2. कुल सम्पन्न, 3. विनय सम्पन्न, 4. ज्ञान सम्पन्न, 5. दर्शन सम्पन्न, 6. चारित्र सम्पन्न, 7. क्षान्त, 8. दान्त, 9. अमायी, 10. अपश्चात्तापी।

(d) धर्मध्यान के चार लक्षण लिखिए।

उ. 1. आज्ञारुचि- जिनाज्ञा में रुचि-श्रद्धा रखना।

2. निसर्गरुचि- बिना किसी उपदेश के, पूर्व संस्कारों के कारण, स्वभाव से ही जिनभाषित तत्त्वों में श्रद्धा रखना।

3. उपदेशरुचि- साधु-सन्तों का उपदेश सुनकर तत्त्व-ज्ञान समझकर जिनभाषित तत्त्वों में श्रद्धा रखना।

4. सूत्ररुचि- सूत्र पढ़कर वीतराग द्वारा प्रतिपादित तत्त्व समझना और समझकर श्रद्धा करना।

(e) स्थिति बंध एवं अनुभाग बंध को समझाइए।

उ. स्थिति बंध- जीव के साथ सम्बद्ध कर्म-पुद्गलों की, अमुख काल तक ज्ञान को आवरण करने आदि रूप अपने-अपने स्वभाव का त्याग न करते हुए, जीव के साथ रहने की काल मर्यादा को 'स्थिति बंध' कहते हैं।

अनुभाग बंध- कर्मों के फल देने की तीव्रता-मंदता आदि विशेषताओं का न्यूनाधिक होना 'अनुभाग बंध' कहलाता है। अनुभाग बंध को अनुभाव बंध, अनुभव बंध तथा रस बंध भी कहते हैं।

(f) नवतत्त्वों को जानने से जीव को क्या लाभ होता है ?

उ. जो जीवादि नव तत्त्वों को जानता है, उसे सम्यक्त्व प्राप्त होता हैं सम्यक्त्व प्राप्त करने वाला जीव संसार को परीत्त-सीमित कर देता है एवं सम्यग् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना कर सकल कर्मों को क्षय कर मोक्ष प्राप्त करता है।

(g) श्रौत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बांधता है ?

उ. आयुष्य कर्म को छोड़कर बाकी सात कर्मों की प्रकृति यदि ढीली हो तो गाढ़ी-दृढ करता है। थोड़े काल की स्थिति हो तो बहुत काल की स्थिति करता है। मन्द रस वाली हो तो तीव्र रस वाली करता है। आयुष्य बांधता है अथवा नहीं भी बांधता है। असातावेदनीय कर्म बार-बार बांधता है और चार

गति रूप संसार में परिभ्रमण करता रहता है।

(h) जीव के हल्का एवं भारी होने के क्या कारण हैं ? उल्लेख कीजिए।

उ. 18 प्रकार के पापों के आचरण से जीव भारी होता है और इन पापों से विरत होने (त्याग करने) से जीव हल्का होता है।

(i) संसार में ऐसे कौन-कौन से स्थान है, जहाँ पर जीव ने अनन्त बार जन्म-मरण नहीं किया है ?

उ. चार अनुत्तर विमान में दो बार तथा सर्वार्थसिद्ध विमान में एक बार से अधिक जन्म नहीं होता है। दूसरे देवलोक से ऊपर देवियों के रूप में जन्म ही नहीं होता है। अतः इन स्थानों पर अनन्त बार जन्म-मरण करने का निषेध किया गया है।

(j) दसवें, ग्यारहवें एवं बारहवें देवलोक में जघन्य एवं उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास की स्थिति लिखिए।

उ. दसवें देवलोक के देव जघन्य 19 पक्ष, उत्कृष्ट 20 पक्ष में।

ग्यारहवें देवलोक के देव जघन्य 20 पक्ष, उत्कृष्ट 21 पक्ष में।

बारहवें देवलोक के देव जघन्य 21 पक्ष, उत्कृष्ट 22 पक्ष में।

(k) एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जाति के जीव कौन-कौनसी इन्द्रियों से श्वास लेते हैं तथा छोड़ते हैं ?

उ. एकेन्द्रिय जीव स्पर्शनेन्द्रिय से ही श्वास लेते तथा छोड़ते हैं। बेइन्द्रिय जीव स्पर्शन तथा मुख से श्वास लेते छोड़ते हैं। तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीव तीनों इन्द्रियों से (स्पर्शन, मुख तथा घ्राण) श्वास लेते तथा छोड़ते हैं।

(l) श्रमण निर्ग्रन्थों का संयम-सुख कैसे बढ़ता हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

उ. देवलोकों में जैसे-जैसे ऋद्धि, प्रभा, लेश्या, स्थिति आदि बढ़ती जाती हैं। वैसे-वैसे वहाँ के देवों में व्याकुलता, चंचलता, कौतुकता, उत्सुकता आदि कम-कम होती जाती है तथा उनके सुख रूप लेश्या बढ़ती जाती है। ठीक इसी प्रकार श्रमण निर्ग्रन्थों के निरतिचार संयम पर्याय में जैसे-जैसे वृद्धि होती है, वैसे-वैसे उनका संयम-सुख भी उत्तरोत्तर बढ़ता चला जाता है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा : तृतीय – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) नव तत्त्वों में रूपी तत्त्व है -

(क) जीव (ख) संवर

(ग) मोक्ष (घ) पुण्य (घ)

(b) 'अनित्य भावना' भाई थी -

(क) भरत चक्रवर्ती ने (ख) हरिकेशी मुनि ने

(ग) अर्जुन अणगार ने (घ) मृगापुत्र जी ने (क)

(c) 'ऊँचे स्वर से रोना-चिल्लाना' ध्यान का लक्षण है -

(क) रौद्रध्यान का (ख) आर्त्तध्यान का

(ग) धर्मध्यान का (घ) शुक्लध्यान का (ख)

(d) पाप कर्म भोगने की प्रकृतियाँ हैं -

(क) 18 (ख) 42

(ग) 82 (घ) 34 (ग)

(e) किस कारण से जीव भारी होता है-

(क) पाप के सेवन से (ख) संवर के सेवन से

(ग) पुण्य के सेवन से (घ) लोभ के सेवन से (क)

(f) जीवों का भवसिद्धिपना है-

(क) परिणाम से (ख) स्वभाव से

(ग) कर्मादि से (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(g) यह लोक कितना बड़ा है ?

(क) संख्यात कोडा कोडी योजन (ख) संख्यातासंख्यात कोडा कोडी योजन

(ग) असंख्याता कोडा कोडी योजना (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(h) श्वासोच्छवास का थोकड़ा लिया गया है-

(क)प्रज्ञापना सूत्र से (ख) भगवती सूत्र से

(ग) अनुयोग द्वार सूत्र से (घ) उत्तराध्ययन सूत्र से (क)

(i) चार अनुत्तर विमान के देव श्वासोच्छवास लेते हैं-

(क)जघन्य 24 पक्ष उत्कृष्ट 25 पक्ष में (ख) जघन्य 31 पक्ष उत्कृष्ट 33 पक्ष में

(ग) अनियत समय में (घ) जघन्य 17 पक्ष उत्कृष्ट 18 पक्ष में (ख)

(j) किस श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख ग्रह नक्षत्र तारा इन तीन ज्योतिषी देवों के सुख से बढ़कर होता है-

(क) दो मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(ख) छह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(ग) चार मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(घ) पाँच मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) साधरण, वनस्पति का भेद है। (हाँ)

(b) बिना उपयोग के लापरवाही से लगने वाली क्रिया अणाभोगवत्तिया क्रिया है। (हाँ)

(c) संसार भावना नमिराज ऋषि ने भाई थी। (नहीं)

(d) जिसे प्रायश्चित्त का ज्ञान नहीं है, ऐसे अगीतार्थ मुनि के पास आलोचना करे तो छण्णं प्रायश्चित्त का दोष है। (नहीं)

(e) 18 पापों का आचरण करके जीव कर्मों की स्थिति बढ़ाता है। (हाँ)

(f) अव्यवहार राशि में ऐसे अनन्तानन्त जीव हैं जिन्हें कभी वहाँ से निकलने का अवसर ही नहीं मिल पाता। (हाँ)

(g) चार अनुत्तर विमान में जीव दो बार से अधिक जन्म नहीं लेता है। (हाँ)

(h) देवताओं में अन्तर्मुहूर्त तक श्वास लेने छोड़ने की प्रक्रिया चलती रहती है। (हाँ)

(i) श्वासोच्छवास की प्रक्रिया हर गति जाति आदि जीवों में एक समान होती है। (नहीं)

(j) बारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख पाँच अनुत्तर विमान के देवों के सुख से बढ़कर होता है। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मैं प्रायश्चित्त का वह दोष हूँ, जो दूसरों को सुनाने के लिए जोर-जोर से बोलकर आलोचना करता हूँ। सद्दाउलगं

(b) मैं ज्ञान विनय का पाँचवाँ भेद हूँ। केवलज्ञान विनय

(c) मैने लोक भावना भाई थी। शिवराज ऋषि

(d) मेरा सेवन करके जीव संसार सागर में रूलता है। अठारह पाप का सेवन

(e) मैं वह राशि हूँ जिसके सभी भवी जीव अवश्य मोक्ष में जाते हैं। व्यवहार राशि

(f) मैने देवानंदा की तरह दीक्षा लेकर और केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष गति को प्राप्त किया। जयंती श्रमणोपासिका

(g) भव भ्रमण करता हुआ जीव मेरे स्थान पर अनन्त बार उत्पन्न नहीं हुआ है। पाँच अनुत्तर विमान

(h) मेरा श्वासोच्छ्वास जघन्य 28 पक्ष उत्कृष्ट 29 पक्ष में होता है। सातवीं ग्रैवेयक के देव

(i) मेरा सुख सनत्कुमार और माहेन्द्र देवलोक के देवों के सुख से बढ़कर होता है। सात मास की दीक्षा पर्याय वाले साधु

(j) मेरा सुख असुर कुमारों से बढ़कर होता है। तीन मास की दीक्षा पर्याय वाले साधु

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। 14x2 = (28)

(a) नवतत्त्वों में कौन से तत्त्व जानने योग्य, छोड़ने योग्य, ग्रहण करने योग्य है ?

उ. नव तत्त्वों में से दो तत्त्व- जीव, अजीव जानने योग्य है, तीन तत्त्व-पाप, आश्रव और बंध छोड़ने योग्य हैं और चार तत्त्व-पुण्य, संवर, निर्जरा और मोक्ष ग्रहण करने योग्य हैं।

(b) पन्द्रह परमाधामी देवों के नाम लिखिए।

उ. पन्द्रह परमाधामी देव- अम्ब, अम्बरीष, श्याम, शबल, रौद्र, महारौद्र, काल, महाकाल, असिपत्र, धनु, कुम्भ, वालुय, वैतरणी, खरस्वर, महाघोष।

(c) रस परित्याग के 9 भेदों के नाम लिखिए।

उ. 1. णिव्वियतिए 2. पणीअ रस परिच्चाए 3. आयंबिलए 4. आयामसित्थ भोई
5. अरसाहारे 6. विरसाहारे 7. अंताहारे 8. पंताहारे 9. लूहाहारे।

(d) 'विपरिणामानुप्रेक्षा' का अर्थ लिखिए।

उ. वस्तुओं का प्रतिक्षण विविध रूपों में विपरिणमन-परिवर्तन होता रहता है, इसका चिन्तन करना।

(e) प्रायश्चित्त देने वाले के अपरिश्रावी गुण को समझाइए।

उ. आलोचित दोषों को दूसरों के सामने प्रकट नहीं करने वाला।

(f) आर्त्तध्यान के चार लक्षण लिखिए।

उ. 1. ऊचे स्वर से रोना- चिल्लाना। 2. दीनपना लाना।
3. टप-टप आँसू गिराना। 4. बार-बार विलाप करना।

(g) प्रकृति बंध किसे कहते हैं?

उ. जीव के साथ सम्बद्ध कर्म-पुद्गलों में ज्ञान को आवरण करने, दर्शन को रोकने, सुख दुःख देने आदि अलग-अलग स्वभाव का होना 'प्रकृति बंध' कहलाता है।

(h) अतीर्थसिद्ध को परिभाषित कीजिए।

तीर्थ की स्थापना होने से पहले अथवा तीर्थ का विच्छेद होने पर जो सिद्ध होते हैं, वे अतीर्थ सिद्ध

कहलाते हैं, जैसे- मरूदेवी माता आदि।

(i) किस कारण से जीव संसार को बढ़ता है और किस आचरण से संसार को घटाता है ?

उ. 18 पापों के सेवन से जीव संसार बढाता है और 18 पापों के विरमण (निवृत होकर) से जीव संसार घटाता है।

(j) अधर्मी जीव सोते हुए अच्छे क्यों बताए गए हैं ?

उ. क्योंकि वे किसी प्राण, भूत, जीव, सत्व को दुःख नहीं दे पाते, आत्मा को अधर्म में नहीं जोड़ते।

(k) अहो भगवन्! क्या यह जीव सब जीवों के मातापने भाईपने पुत्रपने उत्पन्न हुआ है ?

उ. है गौतम! अनेक बार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हुआ है।

(l) जिन जीवों के एक बार भी प्रत्येक नाम कर्म का उदय हो चुका है, वे किस राशि के जीव कहलाते हैं?

उ. व्यवहार राशि के।

(m) ज्योतिषि देवों का श्वासोच्छ्वास लिखिए।

उ. जघन्य और उत्कृष्ट- पृथक्त्व मुहूर्त्त।

(n) छठे देवलोक के देवों का श्वासोच्छ्वास लिखिए।

उ. जघन्य 10 पक्ष, उत्कृष्ट 14 पक्ष में।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) सोलह वाणव्यन्तर व दस त्रिजृम्भक के नाम लिखिए।

सोलह वाणव्यन्तर- पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गंधर्व, आणपन्ने, पाणपन्ने, इसिवाई, भूयवाई, कन्दे, महाकन्दे, कुहुण्डे और पयंगदेव।

दस त्रिजृम्भक- अन्न जृम्भक, पान जृम्भक, लयन जृम्भक, शयन जृम्भक, वस्त्र जृम्भक, फल जृम्भक, पुष्प जृम्भक, फल-पुष्प जृम्भक, विद्या जृम्भक और अग्नि जृम्भक

(b) दस प्रकार की प्रतिसेवना के नाम व प्रथम चार प्रतिसेवना के अर्थ लिखिए।

1. दर्प	2. प्रमाद	3. अनाभोग	4. आतुर	5.आपत्ति
6. शंकित	7. सहसाकार	8. भय	9. प्रद्वेष	10. विमर्श

1. दर्प- अहंकारवश संयम की विराधना करना।

2. प्रमाद-प्रमाद के वशीभूत होकर दोष लगाना।

3. अनाभोग- बिना उपयोग के अज्ञानवश संयम में दोष लगाना।

4. आतुर- भूखादि से पीड़ित होकर दोष लगाना।

(c) प्रशस्तकाय विनय व अप्रशस्तकाय विनय के भेदों के नाम लिखिए।

उ. प्रशस्तकाय विनय के सात भेद- उपयोगपूर्वक सावधानी के साथ- 1. जाना 2. खड़ा होना 3. बैठना 4. सोना 5. उल्लंघन करना 6. बार-बार उल्लंघन करना और 7 सभी इन्द्रियों और काययोग की प्रवृत्ति करना।

अप्रशस्तकाय विनय के सात भेद- 1. बिना उपयोग के असावधानी के साथ जाना 2. खड़ा रहना 3. बैठना 4. सोना 5. उल्लंघन करना 6. बार-बार उल्लंघन करना और 7 सभी इन्द्रियों और काययोग की प्रवृत्ति करना।

(d) शुक्ल ध्यान के चार लक्षणों का वर्णन कीजिए।

उ. 1. विवेक- शरीर से आत्मा को भिन्न समझना और आत्मा को सभी संयोगों से भिन्न समझना।

2. व्युत्सर्ग- निःसंग यानि संग (आसक्ति) रहित होने से शरीर और उपधि का त्याग करना।

3. अव्यथ- देवादिक का उपसर्ग होने पर भी भयभीत होकर विचलित न होना।

4. असंमोह- देवादि की माया से मोहित न होना और सूक्ष्म पदार्थ विषयक चिन्तन में न उलझना।

(e) मोक्ष तत्त्व के भाव द्वार व अल्प बहुत्व द्वार को समझाइए।

उ. भाव द्वार- सिद्धों में क्षायिक और पारिणामिक ये दो भाव पाये जाते हैं। क्षायिक भाव में केवल ज्ञान, केवल दर्शन और क्षायिक सम्यक्त्व पाये जाते हैं। पारिणामिक भाव में जीवत्व पाया जाता है।

अल्पबहुत्व द्वार- सबसे थोड़े नपुंसक लिंग सिद्ध हैं। स्त्रीलिंग सिद्ध उनसे संख्यात गुणा अधिक है और उनसे भी पुरुष लिंग सिद्ध संख्यात गुणा है। कारण यह है कि नपुंसक लिंग वाले एक समय में उत्कृष्ट दस मोक्ष जा सकते हैं। स्त्री लिंग में एक समय में उत्कृष्ट बीस और पुरूष लिंग से एक समय में 108 मोक्ष जा सकते हैं।

(f) बुद्धबौधित सिद्ध, एकसिद्ध, अनेकसिद्ध को समझाइए।

उ. बुद्धबौधित सिद्ध- गुरु के उपदेश से बोध प्राप्त कर, दीक्षित होकर जो मोक्ष में जाते हैं, इन्हें बुद्ध बोधित सिद्ध कहते हैं, जैसे- जम्बू स्वामी।

एकसिद्ध- एक समय में अकेला ही मोक्ष जाने वाला जीव एक सिद्ध कहलाता है, जैसे-महावीर स्वामी।

अनेकसिद्ध- एक समय में एक से अधिक यानि दो से लेकर एक सौ आठ तक मोक्ष में जाने वाले जीव अनेक सिद्ध कहलाते है, जैसे- भगवान ऋषभदेव।

(g) लोक भव सिद्धिक जीवों से कभी खाली नहीं होता, कैसे? दृष्टांत सहित समझाइए।

उ. जैसे आकाश की श्रेणी अनादि अनन्त हैं। उसमें से एक-एक परमाणु खण्ड जितना प्रदेश, एक-एक समय से निकाले। इस प्रकार निकालते-निकालते अनन्ती अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी पूरी हो जाय, तो भी यह आकाश श्रेणी खाली नहीं होती। इसी प्रकार सभी भवसिद्धिक जीव मोक्ष जायेंगे तो भी यह लोक भवसिद्धिक जीवों से कभी भी खाली नहीं होगा।

(h) व्यवहार राशि के सभी जीव मोक्ष में जाने पर भी व्यवहार राशि में जीव बराबर बने रहते हैं, कैसे? दृष्टांत सहित समझाइए।

उ. जैसे भविष्यत् काल वर्तमान में आता है और एक समय बाद भूत में चला जाता है। यह क्रम अनादिकाल से चल रहा है और अनन्त काल तक चलेगा। किन्तु भविष्यत्काल का कभी अन्त नहीं होगा।इसी प्रकार व्यवहार राशि में जीव कभी कम नहीं होंगे। अव्यवहार राशि से आते रहेंगे।

(i) श्रोत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बांधता है ?

उ. आयुष्य कर्म को छोड़कर बाकी सात कर्मों की प्रकृति यदि ढीली हो तो गाढ़ी-दृढ करता है। थोड़े काल की स्थिति हो तो बहुत काल की स्थिति करता है। मन्द रस वाली हो तो तीव्र रस वाली करता है। आयुष्य बांधता है अथवा नहीं भी बांधता है। असातावेदनीय कर्म बार-बार बांधता है और चार गति रूप संसार में परिभ्रमण करता रहता है।

(j) संसार में ऐसी कोई जगह नहीं बची, जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो। इस बात की पुष्टि करने वाले कोई चार कारण लिखिए।

उ. 1. लोक शाश्वत है। (विनाशी होने पर संसार में सभी जगहों पर जन्म-मरण की बात घटित नहीं हो सकती)

2. लोक अनादि है। (लोक को सादि-आदि सहित मानने पर भी सभी जगह जन्म-मरण की बात घटित नहीं हो सकती)

3.जीव नित्य है।(यदि जीव अनित्य हो तो भी सभी जगहों पर जन्म-मरण की बात घटित नहीं हो सकती)

4. कर्मों की बहुलता है। (यदि कर्मों की अल्पता हो तो भी सब जगह जन्म-मरण नहीं हो सकता)

5. जन्म-मरण की बहुलता है। (यदि जन्म-मरण की अल्पता हो तो भी सभी जगह जन्म-मरण नहीं हो सकता)

(k) एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों की श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया बताइए।

उ. एकेन्द्रिय जीव स्पर्शनेन्द्रिय से ही श्वास लेते तथा छोड़ते हैं। बेइन्द्रिय जीव स्पर्शन तथा मुख से श्वास लेते छोड़ते हैं। तेइन्द्रिय चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीव तीनों इन्द्रियों से(स्पर्शन,मुख तथा घ्राण)श्वास लेते तथा छोड़ते हैं।

(l) देवताओं में श्वास ग्रहण की प्रक्रिया उदाहरण सहित बताइए।

उ. देवताओं में श्वास ग्रहण की प्रक्रिया अन्तर्मुहूर्त्त तक चलती है फिर अन्तर्मुहूर्त्त तक श्वास छोड़ते हैं। उदाहरण के रूप में एक सैकण्ड तक श्वास लेते रहना फिर एक सैकण्ड तक श्वास छोड़ते रहना। अर्थात् अन्तर्मुहूर्त्त तक श्वास लेने-छोड़ने की प्रक्रिया चलती है।

(m) श्रमण निर्ग्रन्थों के निरतिचार संयम पर्याय का पालन करने से शाश्वत सिद्धि रूप सुख को प्राप्त होता है, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उ. विशेष आत्म विशुद्धि होने से वह श्रमण-निर्ग्रन्थ निरतिचार संयम का पालन करने वाला होता है। अतएव वह पद्म लेश्या वाला-शुक्ल लेश्या वाला तथा इससे आगे वह परम शुक्ल (परम सुखी) हो जाता है। तत्पश्चात् वह सिद्ध, बुद्ध यावत् मुक्त हो जाता है।

(n) दस मास, ग्यारह मास, बारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थों का सुख किनसे बढ़कर होता है? लिखिए।

उ. दस मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख आणत, प्राणत, आरण और अच्युत (9,10,11,12) देवलोकों के देवों के सुख से बढ़कर होता है।

ग्यारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख नवग्रैवेयक देवों के सुख से बढ़कर होता है।

बारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख पाँच अनुत्तर विमान के देवों के सुख से बढ़कर होता है।